Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue – 2015

मूल्योक्त–शिक्षा से व्यक्तित्व–निर्माण का शंखनाद

डॉ. जितेन्द्र लोढ़ा*

आज विश्व में चारों ओर अशांति है, क्योंकि शाश्वत मानवीय–मूल्य, भौतिक मूल्यों से प्रभावित हो रहे हैं, जिससे मानवीय जीवन की गुणवत्ता का अवमूल्यन हो रहा है। आज का समाज एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन की इस आंधी ने जहां एक ओर जीवन के बहुतेरे मूल्यों एवं प्रतीकों पर प्रहार किया है तो वहीं दूसरी ओर हमारी पूरी की पूरी पीढ़ी को परम्परा और आधुनिकता, जड़ता और गतिमयता के द्वन्द्वों में भटकने के लिए छोड़ दिया है। इस संबंध में शिक्षाशास्त्री प्रो.वी. आर. तनेजा के ये शब्द एकदम समीचीन लगते है कि "भौतिकता ने आज हम सब को इतना घेर लिया है कि हमसे लगभग प्रत्येक धन के देवता का उपासक बन गया है। सभी मूल्य प्रतिमान हवा में उड़ गये हैं, और लोग लूटमार और शक्ति प्राप्त करने की होड़ में लगे हुए हैं। बुद्धिजीवी भी या तो पृथकत्व का शिकार बन गये है या किराये के लोगों जैसा बर्ताव करने लगें है। विश्वविद्यालय और कॉलेज तुच्छ दलबन्दी से बिगड़ रहे हैं। भावनाएँ तर्क पर हावी है। साधारण मनुष्य प्रचलित भ्रष्टाचार के बोझ से चीख रहा है। स्वार्थीपन, शोषण एवं पाखण्ड आज के जीवन की सामान्य विशेषताएँ है। हम संकुचित दलबन्दी, क्षेत्रीयता और कट्टरता की जकड़ में आ गये हैं। मानव ने भले ही चन्द्रमा पर विजय प्राप्त कर ली है, लेकिन वह मस्तिष्क पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ हो गया है।"[1]

आज के मनुष्य ने पूर्व की अपेक्षा अधिक भौतिक–संसाधन जुटा कर अपने जीवन को आरामदायक बना लिया है, लेकिन इसके साथ–साथ आज पूरा विश्व नस्ल, धर्म, जाति, वर्ग और आस्था के आधार पर बटने की स्थिति में पहुंच चुका है। एक प्रकार से यह विरोधाभासी स्थिति है कि एक ओर मानव इस पृथ्वी पर मौजूद सभी प्राणियों में सर्वाधिक विकसित और बुद्धिमान प्राणी के रूप में उभरा है, तो वहीं दूसरी ओर मानव जाति अत्यधिक आत्म केन्द्रित, व्यक्तिवादी, असहिष्णु और काफी हद तक आत्मघाती बन गयी है। इस कारण आज हम अभूतपूर्व हिंसा के दौर में जी रहें है। आज हम भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार, अलगाववाद, जातिवाद, आतंकवाद, मूल्य–संकट एवं हिंसा के दौर को देखे तो ऐसा लगता ही नहीं कि कभी भारतीय–संस्कृति सर्वे भवंतु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम, पापाय परपीड़नम्, मनुष्य में देवत्व एवं सर्वशान्ति की स्थापना जैसे आदर्शों व मूल्यों की अधिष्ठात्री रही है।

'भारतीय संस्कृति व दर्शन अपने स्थापना–काल से लेकर आज तक मूल्यों व आदर्शों का प्रतिमान रहा है। इस कारण मूल्य निरूपण व इस दिशा के शैक्षिक–मॉडल की दृष्टि से भारतीय शिक्षा–दर्शन एवं उसके तद्नुरूप जीवन–शैली एक अग्रगामी उपागम है,

*स्वतंत्र लेखक, व्याख्याता शिक्षा, शिक्षा–संकाय, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाडेरा (जयपुर) ।
E-mail Id: dr.jitendrlodha@yahoo.com

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

लेकिन वेदना यह है कि ऐसी समृद्ध विरासत होने के बावजूद आज हम अशांत व मूल्यहीन–पर्यावरण के गर्त में पड़े हुए है।'[2]

यदि हम वैश्विक–संदर्भों में देखे तो आज मिश्र व लीबिया सहित विश्व के अनेक देशों में नागरिक अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। इसी कड़ी–क्रम में जब हम चीन, नामीबिया, सोमालिया एवं अफगानिस्तान आदि देशों में हाल के समय में हुई अमानवीय यातनाओं, नरसंहार, गम्भीर अपराधों, नशीलें पदार्थों के व्यापार, हिंसक अस्त्र–शस्त्रों के निर्माण, जापान, इटली, यूनान सहित अनेक प्रजातांत्रिक दशों में राजनैतिक नेताओं के भ्रष्टाचार के कारनामों, पर्यावरण को नष्ट करने की प्रवृत्तियों एवं एड्स से मरने वालों के आंकड़ें देखे तो सिद्ध होता है कि इक्कीसवीं शताब्दी के इस विश्व में विज्ञान व तकनीकी के लाभ के साथ–साथ कुछ गम्भीर चुनौतियाँ भी उपस्थित है। आज समूचा विश्व युद्ध सामग्री के विस्तार, अत्यधिक राजनैतिक तनाव, अन्तर्राष्ट्रीय–विवाद, धन व प्राकृतिक साधनों का असमान वितरण, अन्तर्कलह एवं मानवाधिकार हनन जैसी अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है।

ये सभी परिस्थितियाँ शान्त– सहवास, सामाजिक–समरसता एवं संस्कारयुक्त –विकास की अवधारणाओं को प्रभावित कर अशांत व विनाशोन्मुख विश्व को बढ़ावा दे रही है। इन परिस्थितियों से बचने के लिए आने वाली पीढ़ी में मूल्य निरूपण एवं सृजन की संस्कृति के विकास की तीक्ष्ण आवश्यकता है, और इस आवश्यकता की महती आपूर्ति "मूल्य–शिक्षा" द्वारा सम्भव है।

वर्तमान के समग्र परिवेश व संदर्भों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि शिक्षा व उसके आवश्यकतापरक स्वरूप एक सार्थक सम्पदा है, जो वर्तमान की मूल्य–संकट की चुनौतियों का सामना करने के लिए किये गये प्रयासों की सफलता में सहायक हो सकती है। इस संबंध में डेलर आयोग ने बड़ा ही सामयिक लिखा है कि "शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसमें मानव के विकास का सुसंगठित स्वरूप पनप सकें तथा जिससे गरीबी, अलगाव, अज्ञान, शोषण एवं युद्ध की स्थितियों का निराकरण हो सके, इसलिए शांति, धैर्य एवं साहस प्रदान करना शिक्षा की जिम्मेदारी है।"[3] मूल्यों की शिक्षा का महत्व समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में भी कहा गया है कि "समाज में आवश्यक मूल्यों के ह्रास पर उभरती हुई चिन्ता और बढ़ती हुई कटुता ने पाठ्यचर्या में पुनः समायोजन की आवश्यकता को केन्द्र में रखकर शिक्षा को सामाजिक व नैतिक–मूल्यों के संवर्द्धन का प्रबल साधन बनाया जाये।"[4] भारत के विभिन्न शैक्षिक– संदर्भों, पैरोकारों, योजनाओं एवं आजादी से लेकर आज तक की शैक्षिक– नीतियों में कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस तथ्य को स्वीकार किया गया है कि सुचित मानवता एवं सम्यक व्यक्तियों के निर्माण के लिए शिक्षा में आदर्शों व मूल्यों के शीलगुण होना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा मूल्यों का विकास वैयक्तिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक संदर्भों में एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यकता आधारित उपागम है, जिसकी आज महती आवश्यकता है। वैश्विक–शांति, सामाजिक–समरसता, सांस्कृतिक–विकास, संस्कारयुक्त– विकास, राष्ट्रीय–चेतना, समानता,

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

कर्त्तव्यपरायणता जैसे जीवन के शाश्वत मूल्यों के साथ–साथ अनेक व्यक्तिगत मूल्यों के विकास एवं निरूपण के लिए मूल्य–शिक्षा एक महत्वपूर्ण अभिकरण है।

मानव जाति में जीवन मूल्यों के क्षय का प्रभाव आम जनमानस के वैयक्तिक जीवन पर भी पड़ा है। आज वैयक्तिक जीवन में आवश्यक संस्कारों का अभाव दृष्टिगोचर होता दिखाई देता है। आज के किशोरों में अनुशासनहीनता, कर्त्तव्यविमुखता, नशावृत्ति, हिंसा, उच्छृंखलता, अपराधिक व्यवहार, अभद्रता, धैर्याभाव, दूषित–भाषा, सांवेगिक–अस्थिरता, निराशावादिता, अवज्ञाकारिता, उन्मुक्तता, उदण्डता, संवेदनहीनता एवं हिंसात्मकता जैसे गुणभाव परिलक्षित हो रहे हैं। इन सब स्थितियों के पीछे मूल कारण है, समाज में शाश्वत व आवश्यक मूल्यों का पतन एवं प्रभावशाली मूल्य निरूपण, सम्प्रेषण व प्रेरक प्रतिभाओं तथा व्यवस्थाओं का अभाव एवं कमजोर तंत्रीय होना है।[5] मानवीय व्यक्तित्व, व्यक्ति विशेष के बाह्य व आंतरिक शीलगुणों का संघटन होता है। आमतौर पर हम व्यक्ति विशेष की बाह्य बनावट, पहनावा, आचार –विचार के अच्छे प्रदर्शन व अच्छे प्रकटीकरण को अच्छा व्यक्तित्व मानते हैं। इस प्रकार आदर्श व मानक व्यवहार–गुणों का प्रदर्शन व प्रकटीकरण व्यक्तित्व मापन की कसौटी होता है। अपने व्यापक भाव में व्यक्ति के आंतरिक गुणों की उच्चता, उसके व्यक्तित्व की पहचान व परिचायक घटक होती है। हिन्दी में भी 'मूल्य' शब्द के पर्याय के रूप में 'आदर्श', 'शील' आदि शब्दों का प्रयोग भी कहीं–कहीं पाया जाता है।[6] इस प्रकार व्यक्तित्व विभिन्न शीलगुणों के स्वरूप व समुच्चय का फलन होने के कारण प्रत्यक्ष रूप से मूल्यों की अवधारणा से भी जुड़ा हुआ है।

चूंकि मूल्यपरक–शिक्षा ऐसे वैयक्तिक शीलगुणों व शाश्वत–मूल्यों के विकास पर बल देती है, जिससे कि व्यक्तित्व के सभी स्तरों या पक्षों का संतुलित विकास हो सके। इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए ही श्री सत्य साईं बाल विकास ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "Curriculum and Methodology for Integrated Human Value in Education" में स्पष्ट लिखा गया है कि "बालक के सर्वांगीण–व्यक्तित्व के संतुलित–विकास हेतु अर्थात् उनके शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन हेतु, शिक्षा के ज्ञान, काशल, पहचान, अन्तर्विषय वस्तु में मूल्यपरकता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। वर्तमान शिक्षा केवल दो पक्ष यथा शारीरिक व बौद्धिक दृष्टिकोणों पर ध्यान दे रही है। शैक्षिक मानव–मूल्यों (E.H.V.) द्वारा 'बालकों के संतुलित व आवश्यकतापरक' व्यक्तित्व के विकास को दिशा दी जा सकती है।"[7] प्रसिद्ध समाज विज्ञानी आचार्य महाप्रज्ञ का कहना भी इस दिशा में सार्थक है कि "वर्तमान की शिक्षा में एक चरण टूट गया है। वह लंगड़ी हो गयी है। इसलिए हमें जो व्यक्तित्व चाहिए वो नहीं मिल पा रहे है।" आचार्य श्री का कहना है कि "जिज्ञासा का समाधान शिक्षा द्वारा होता है, करने के कौशल शिक्षा द्वारा प्राप्त होते हैं, होने व बदलने का पराक्रम शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है, जानने का माध्यम भी शिक्षा से प्राप्त होता है । इसलिए जानने, होने, करने एवं बदलने के क्षेत्रों पर हमें विचार करना होगा साथ ही हमें शिक्षा को शारीरिक, मानसिक,

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

बौद्धिक एवं भावात्मक–विकास की अधिष्ठात्री बनाना होगा। इन चारों विकासों में व्यक्तित्व–निर्माण से संबंधित सभी विकास समाविष्ट है। अतः बालकों के संतुलित व्यक्तित्व–निर्माण की दृष्टि से शिक्षा को अध्ययन से अभ्यास की ओर चलना पड़ेगा। इस दृष्टि से शिक्षा को, जीवन व उसके मूल्यों से संबद्धित करना ही श्रेष्ठ मार्ग है।"[8] अतः हम कह सकते हैं कि "व्यक्तित्व–निर्माण का शंखनाद, मूल्यों की शिक्षा से ही किया जा सकता है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव–व्यक्तित्व व मानवीय–मूल्य अन्तः संबंधित व परस्पर फलनीय अर्थात् परस्पर–निर्भरता वाली अवधारणायें है। व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व में पांच आधारभूत मूल्य यथा सत्य, उचित व्यवहार, शांति, प्रेम एवं अहिंसा उसके व्यक्तित्व के उच्च कोटि के मानक व उसके व्यक्तित्व विकास के आधार होते हैं। यदि हम आत्मा व जीवन–शक्ति को केवल प्रतीकात्मक मानकर भी बुद्धि व अन्तर्रात्मा (Insight) का सन्तुलन करे तो मानव में सम्यक–व्यक्तित्व स्वतः भाव में उजागर होने की सम्भावना रहती है। साथ ही वह सही निर्णयों की ओर प्रवृत्त होता है, जो उसके व्यक्तित्व को उत्कृष्टता प्रदान करते हैं। इस दृष्टिकोण को अग्रगामी रेखाचित्र से प्रदर्शित किया जा रहा है।

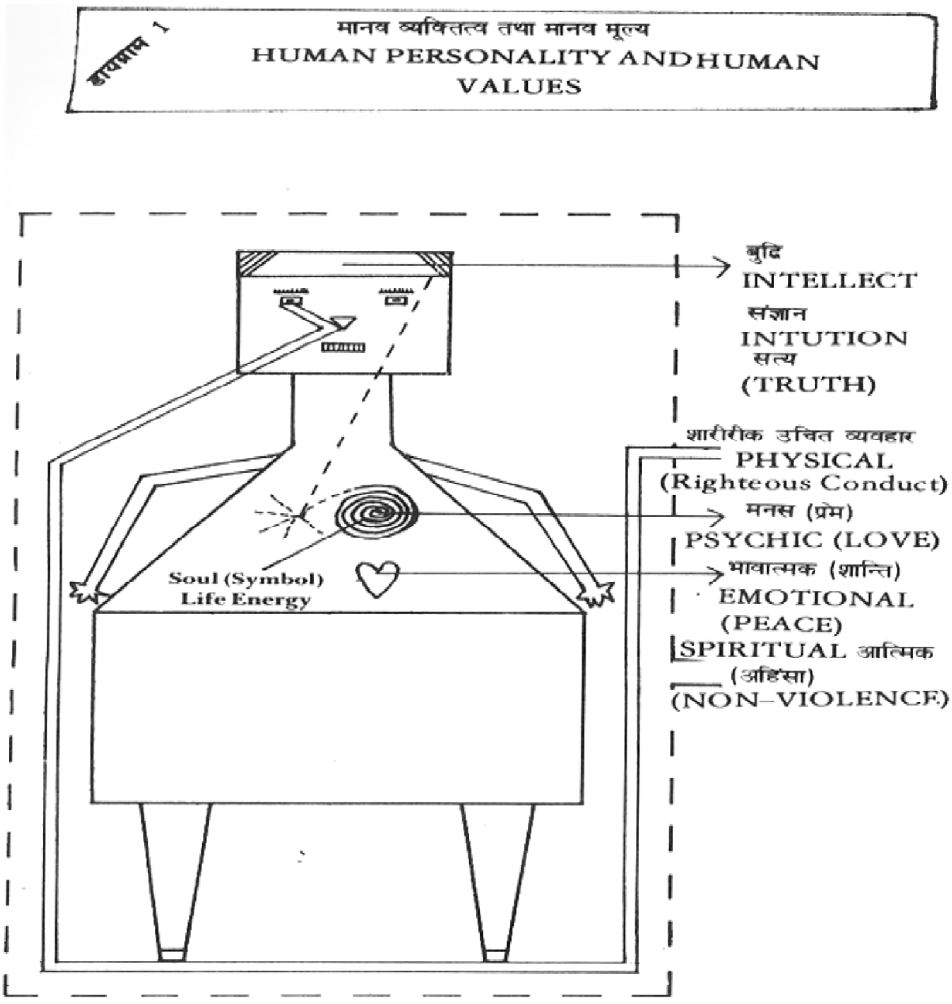

स्रोत : कोटा खुला विश्वविद्यालय के बी.एड. पत्राचार

चित्र 1:मानव व्यक्तित्व एवं मानवीय–मूल्यों

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

पाठ्यक्रम की पुस्तिका BE-I (3) इकाई 16(ठ), वर्ष 1990, पृ.सं.73

चित्र में बुद्धि, संज्ञान, भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के दृष्टिकोण से व्यक्तित्व–विकास की संकल्पना को प्रदर्शित किया गया है। यह स्पष्ट भी है कि विश्व–धर्म, राष्ट्रीय–संस्कृति, सामाजिक–समरसता, सांस्कृतिक–एकता, संस्कारयुक्त–विकास आदि मानव मात्र के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते है, फलन मानवीय–मूल्यों को उचित व सम्यक दिशा मिलती है। व्यक्तित्व के विकास पर मानवता का विकास होता है, मानवता के विकास पर ही सम्यक् राष्ट्र व विश्व के विकास की कल्पना की जा सकती है। बालक के व्यक्तित्व–विकास में मूल्य–शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस वैश्विक स्तरीय अनुभूत निष्कर्ष से अमेरिका की राष्ट्रीय शिक्षा–समिति, यूनेस्को, यू.एन. के सेकेट्री जनरल (2000), अपनी सहमति प्रकट कर सार भाव में कहते हैं कि "न्याय, समानता, समरसता एवं शांति की स्थापना की दृष्टि से सम्यक व आवश्यक संस्कारवान मानव–पूंजी की आवश्यकता है। इस हेतु मूल्य आधारित समाज एवं आध्यात्मिकता आधारित उपचारात्मक पद्धति की महती आवश्यकता है।" भारतीय संदर्भ में धार्मिक शिक्षा–समिति (1946), राधाकृष्णन समिति (1948), मुदालियर आयोग (1952–53), श्री प्रकाश समिति (1959), कोठारी कमीशन (1964–66), नयी शिक्षा नीति (1986), राम मूर्ति समिति (1992), प्रोग्राम ऑफ एक्शन (1992) एवं चौहान समिति (1999) सहित सभी शिक्षा नीतियों में राष्ट्र व व्यक्तित्व–विकास हेतु मूल्यपरक–शिक्षा के महत्व को स्वीकारा गया है।[9] साथ ही एन.सी.ई.आर.टी. ने इन सभी शैक्षणिक आयोगों तथा समितियों के प्रतिवेदनों, विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए अपने प्रलेख "Social, Moral and Spiritual Value in Education" (1979) में 83 जीवन–मूल्यों को चिन्हित कर सूचीबद्ध किया है।[10] ये सभी जीवन–मूल्य काफी कुछ हद तक या यों कहे कि सुचित मानवता के व्यक्तित्व के शीलगुण है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व के विकास में परिवार, समाज, पर्यावरण एवं व्यवस्थाओं के मूल्यों का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में समस्त सुधीजनों के साथ–साथ आचार्य महाप्रज्ञ का कहना है कि "चेतन व पुद्गल (बाह्य आवरण या मिश्रण) का योग हमारा व्यक्तित्व है। अतः शुद्ध व्यक्तित्व निर्माण में इनका सन्तुलन व अभ्यास आवश्यक है, जो जीवन–कौशल या मूल्यों की शिक्षा से ही सम्भव है।"[11]

उपर्युक्त विषयपरक विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व–विकास की प्रक्रिया में जीवन–मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। संस्कार व जीवन के शाश्वत–मूल्यों से अभिप्रेत व्यक्तित्व, आवश्यक व सम्यक व्यक्तित्व होता है। यद्यपि यह चिन्तन व्यक्तित्व व मूल्य–शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रयोगों व अनुभवों का फलन है। बायर्ड टेलर का कहना है कि "आप क्या चरित्र रखते है इस पर आपकी प्रसिद्धि निर्भर करती है, लेकिन सच्चाई यह है कि जैसी आप भावनाऐं रखते हैं, वैसा ही आप जीवन–चरित्र (व्यक्तित्व) रखेंगे।"[12] भावाना–शुद्धि, सन्तुलन, संस्कार, नैतिक–उत्थान आदि के विकास के लिए "मूल्यों की शिक्षा" एक आवश्यक उपागम है, जिसको अपनी विशिष्ट

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

शैलियों के साथ पाठ्यक्रम में रखकर, भावी पीढ़ियों के व्यक्तित्व को उचित दिशा दी जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

[1]. "मूल्यपरक–शिक्षा", उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा (2) BE-I, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, 1990, पृ.सं.–70।

[2]. रस्तोगी कृष्ण गोपाल, "मानवीय मूल्य विकासः व्यावहारिक आचरण", राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, नई दिल्ली, 2001, पृ. सं.–1।

[3]. सिंह, दिनेश कुमार, "वर्तमान संदर्भ में शांति–शिक्षा की संदर्भित उपादेयता", परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली, वर्ष 15, अंक–2, अगस्त–2008, पृ.सं. –71–80।

[4]. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986", उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा (3), इकाई 13, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, 1990, पृ.सं.– 78।

[5]. "मूल्य आधारित अध्यापक–शिक्षा पर राष्ट्रीय मंत्रणा", राष्ट्रीय सेमीनार NCERT व उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में, गाँ.वि.मं. सरदारशहर, राज., 21 से 23 सित. 2003, पृ.सं.–63।

[6]. गुप्ता, नत्थुलाल, "मूल्यपरक शिक्षा और समाज", नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पु.सं.–103।

[7]. "मूल्यपरक–शिक्षा", उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा (2) BE-I, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा 1990, पृ.सं–68–69।

[8]. आचार्य महाप्रज्ञ, "जीवन विज्ञानः शिक्षा का नया आयाम", तुलसी अध्यात्म नीडम प्रकाशन, जैन विश्व भारती, लाडनूं, राज., 1996, पृ.सं.–3।

[9]. अम्बष्ट, एन.के., राजपूत जे.एस. "मूल्य शिक्षा के नीतिगत परिप्रेक्ष्य एवं विशेशज्ञ अभिकरणों का इतिहास" वैल्यू एज्यूकेशन पेराडाइम सिफ्ट, श्री सत्य साईं मानव–मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई–दिल्ली, 2009, पृ.सं. –9–36।

[10]. अग्रवाल, जे.सी. रिसेन्ट डवलपमेन्ट एण्ड ट्रेण्डस इन एज्यूकशन, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं. –45–50।

[11]. आचार्य महाप्रज्ञ, "तत्व बोध–जीवन कौशल के अनुभूत सूत्र", राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2006, पृ.सं. –206–211।

[12]. पिलई, इन्दू, "दा श्री अरविन्दों मॉडल, वैल्यू एज्यूकेशन दा पैराडाइम सिफ्ट", श्री सत्य साईं मानव–मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं.–63।

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**